अध्येताओं की संख्या लगभग दस हजार थी। हर्षयुगीन नालन्दा भारत का ही नहीं अपितु विश्व का प्रमुख ज्ञान केन्द्र था। दक्षिण-एशियाई एवं मध्य-एशियाई विद्यार्थी यहाँ से ज्ञान का आलोक लेकर स्वदेश लौटते थे। हर्ष ने नालन्दा विश्वविद्यालय में एक सुन्दर विहार का निर्माण करवाया और पीतल की चादर से आच्छादित मठ का निर्माण करवाया। उसने विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक दान दिया। नालन्दा बौद्ध धर्म एवं शिक्षा का काफी बड़ा केन्द्र था। इत्सिंग ने 6 वर्षों तक यहाँ बौद्ध धर्म की शिक्षा ~~ग्रहण~~ ग्रहण की थी।

कला एवं स्थापत्य

हर्षयुगीन कला का वस्तुतः कोई स्वतंत्र या पृथक अस्तित्व नहीं है लेकिन हर्ष के समय ~~स्वतंत्र रूप से~~ कुछ मंदिरों तथा मूर्तियों का निर्माण ~~हुआ~~ हुआ। हर्ष के एक शिलालेख से विदित होता है कि वास्तुविद्या में पारंगत विश्वकर्मा की तरह पंडित ने भी मंडप सहित एक सुन्दर मंदिर का निर्माण किया था। सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। मगुआ के ~~मंडेश्वरी का अष्टकोणीय~~ अष्टकोणीय मुंडेश्वरी मंदिर हर्षयुगीन है जो इसी काल की अद्भुत कृति है।

हर्षवर्धन के समय पत्थर, काष्ठ तथा ईंटों के अतिरिक्त धातु तथा बहुमूल्य पत्थरों से मादक जैसी शिल्प की नई विधाओं का विकास हुआ था। धातु की कारीगरी, पत्थरों की महीन कटाई और उसकी रंगसाजी विशेष उल्लेखनीय है। आभूषण के विशेष नमूनों और पत्थर किए गए अलंकरण हर्षयुगीन कला की विशेषता है।

हर्षयुगीन स्थापत्य तथा मूर्तिकला का विकास मंदिरों और मठों के रूप में बना रहा। पर इनमें से बहुसंख्यक मठ एवं मंदिर लकड़ी तथा ईंटों के बने थे जो अल्पकाल में ही नष्ट हो गए। ~~साहित्यिक प्रमाण इसकी पुष्टि करते हैं~~। नालन्दा में हाल ही में चादरों से आच्छादित मठ की स्थापना का पता चला है।

हर्षवर्धन का चालीस वर्षों का शासनकाल निपुणता एवं बुद्धिमत्ता का काल था, जिसमें भारतीय संस्कृति अपनी ऊँचाई पर पहुँची थी। हर्षवर्धन कोई बड़े साम्राज्य का शासक नहीं था, लेकिन इतिहास में उसकी गणना अशोक और कनिष्क के साथ की जाती है।

Scanned with CamScanner

संपत्ति, यहाँ तक कि अपने वस्त्र भी दान में दे देता था। प्रयाग की महामोक्षपरिषद जिसमें इत्सिंग सम्मिलित हुआ था, पाँच लाख व्यक्ति सम्मिलित हुए थे और यह परिषद 75 दिनों तक चली। इसमें प्रथम दिन बुद्ध की, दूसरे दिन शिव की, तीसरे दिन सूर्य की पूजा की गई और चौथे दिन दान दिया जाता था। हर्ष ने एक परिषद में व्यक्तिगत दानशीलता का अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया और प्रजा के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए अथक प्रयास किया।

हर्षवर्द्धन दिग्विजयी सम्राट होने के साथ स्वयं विद्वान एवं विद्वानों का आश्रयदाता एवं गुणग्राही शासक था। भारतीय इतिहास में श्री और सरस्वती दोनों का अनुग्रह प्राप्त करने वाले शासकों में हर्ष भी एक था। हर्षवर्द्धन अपनी आय का चतुर्थांश विद्वानों के पुरस्कार सम्मान के लिए रखता था। उसकी राजसभा में जैन, बौद्ध, ब्राह्मण सभी धर्मों का प्रवेश समान रूप से था। उसकी विद्वत्सभा में

साहित्य

बाणभट्ट, मातंग दिवाकर, ईशान जैसे संस्कृत और लोकभाषा के विद्वान रहा करते थे। बाणभट्ट ने हर्षचरितम् और कादंबरी की रचना की। पूर्वपीठिका एवं चंडीशतक बाण की अन्य रचनाएँ थी। मयूर ने सूर्यशतक की रचना इसी काल में की। हर्षवर्द्धन के राजदरबार में एक विद्वान जयसेन था, जो शब्द विद्या, भूगोल, चिकित्साशास्त्र एवं गणित का ज्ञाता था। हर्ष ने जयसेन को अस्सी गाँवों की आमदनी दानस्वरूप देनी चाही पर उसने इसे अस्वीकार कर दिया। धावक नामक एक अन्य कवि को हर्ष का राज्याश्रय प्राप्त था।

हर्षवर्द्धन केवल विद्वानों का आश्रयदाता नहीं था बल्कि उसकी लेखनी उतनी ही कुशलता से चलती थी। लेखक राजाओं में हर्ष का स्थान काफी ऊँचा है। तीन उच्च कोटि के नाटकों रत्नावली, प्रियदर्शिका एवं नागानंद की रचना की। उसकी तीनों नाटिकाएँ रचनाएँ नाटकीय दृष्टि से संस्कृत साहित्य की उत्तम रचनाएँ हैं। जिनकी तत्कालीन विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

शिक्षा

गुणग्राही हर्ष के विद्याप्रेम का अनुपम उदाहरण नालन्दा विश्वविद्यालय है। उस समय में नालन्दा विश्वविद्यालय अपने उन्नति के शिखर पर था। इसमें लगभग डेढ़ हजार पारंगत विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों के अध्ययन की व्यवस्था थी। हर्ष ने प्रचुर दान देकर इस विश्वविद्यालय का विस्तार किया था। उस समय यहाँ देशी-विदेशी

Dr Bibhuti Bhushan, S.N.S.R.K.S.C. Saharsa, A.I.H., BA-I

Lecture - 12

हर्षवर्द्धन के काल की उपलब्धियाँ

हर्षवर्द्धन एक शासक और विजेता के रूप में महान था परंतु शांति में उसकी विजय, युद्ध में अर्जित विजयों से कहीं अधिक व्यापक थी। हर्ष ने राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की। वह सातवीं शताब्दी की भारतीय सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतीक था। वह लोककल्याणकारी और विद्यानुरागी शासक था। वह जितनी कुशलता से तलवार पकड़ता था उससे ज्यादा कुशलता से कलम पकड़ता था। उसके शासनकाल में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

हर्षवर्द्धन एक धर्मसहिष्णु शासक था। शैव मतावलंबी होते हुए भी उसने अन्य धर्मों को समान रूप से देखा। वह विभिन्न संप्रदायों के विद्वानों को बुलवाकर उनसे धर्म-चर्चा करता था। अपनी बहन राज्यश्री के कारण वह बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुआ तथा ह्वेनसांग के प्रभाव के कारण बौद्ध मतावलंबी हो गया। हर्ष के प्रयासों से महायान बौद्ध धर्म का चीन में प्रचार-प्रसार हुआ और भारत में इसके प्रसार की गति तीव्र हुई। ह्वेनसांग के सम्मान तथा बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए हर्ष ने

धर्म कन्नौज में एक सभा बुलाई, जिसमें 20 राज्यों के राजा विभिन्न धर्मों के विद्वान ब्राह्मण, हजारों हीनयानी और महायानी बौद्ध इकट्ठे हुए. इस अवसर पर कन्नौज में एक विशाल संघाराम तथा 100 फुट ऊँचा बुर्ज बनवाया गया। इसमें सोने के बुद्ध की प्रतिमा बनवाई गई। हर्ष के कन्नौज पहुँचने पर सभा की कार्यवाही जुलूस के रूप में प्रारंभ हुई। ह्वेनसांग ने सभापति का पद ग्रहण किया। वाद-विवाद प्रारंभ हुआ और ह्वेनसांग ने महायान के सिद्धांतों पर भाषण दिया सभा में कुछ व्यवधान भी आया लेकिन सभा 18 दिनों तक चलती रही। ह्वेनसांग ने महायान की श्रेष्ठता प्रमाणित कर दी। ह्वेनसांग को आदर प्रदान करते हुए 'महायानदेव' एवं 'मोक्षदेव' की उपाधि प्रदान की गई।

बौद्धधर्म का समर्थक होने के बावजूद हर्षवर्द्धन की ब्राह्मण धर्म के प्रति ~~उसकी~~ अभिरुचि कम नहीं हुई थी उसका प्रमाण प्रयाग का महामोक्षपरिषद का आयोजन था! जिसका आयोजन हर पाँचवें वर्ष हर्षवर्द्धन करवाता था। इसमें बुद्ध, शिव, और सूर्य की पूजा होती थी ह्वेनसांग ने छठी ही सभा जो प्रयाग में आयोजित हुई थी भाग लिया था। इस अवसर पर वह अपने पाँच वर्षों की अर्जित राशि

Scanned with CamScanner